NEWS CLIPPING: 14.03.2018

DAINIK JAGRAN

खुद को नदियों से जोड़ना होगा : डॉ राजेंद्र सिंह

मैग्सेसे पुरस्कार विजेता डॉ. राजेंद्र सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए वाईएमसीए यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो दिनेश कुमार व अन्य ● जागरण

वाइएमसीए विश्वविद्यालय में विवेकानंद मंच द्वारा जल एवं शांति विषय पर संगोष्ठी का किया गया आयोजन

जागरण संवाददाता, फरीदाबाद : मैग्सेसे पुरस्कार विजेता व जलपुरुष के नाम से प्रसिद्ध हो चुके डॉ.राजेंद्र सिंह ने कहा कि अगर हम नदियों का संरक्षण, विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते हैं, तो हमें खुद को नदियों से जोड़ना होगा। नदियों के जीर्णोद्धार के लिए एक सही ज्ञान प्रणाली का होना जरूरी है। नदियों के जीर्णोद्धार से पहले हमें जलवायु परिवर्तन के मूल कारण का समाधान करना होगा।

डॉ.राजेंद्र सिंह वाईएमसीए यूनिवर्सिटी में विवेकानंद मंच द्वारा जल एवं शांति विषय पर आयोजित संगोष्ठी को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार की और संचालन डॉ.प्रदीप कुमार और डॉ.सोनिया बंसल ने किया। इस दौरान डीन संस्थान प्रो. संदीप ग्रोवर और कुल सचिव डॉ.संजय कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ.राजेंद्र सिंह ने कहा कि भूजल विज्ञान को लेकर बहुत से विशेषज्ञों से बेहतर ज्ञान ग्रामीणों को होता है। भारत समुदाय संचालित विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणाली में महारथ हासिल कर लेगा, अगर स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को बेहतर ढंग से प्रयोग किया जाए।

उन्होंने सभी से नदियों के जीर्णोद्धार में भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने विश्व के पर्यावरण संगठनों के मुख्य एजेंडे में जल को लाने के लिए अपने संघर्ष के बारे में भी बताया। कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने डॉ. राजेंद्र सिंह का विद्यार्थियों को प्रेरणादायी संबोधन देने के लिए आभार जताया तथा कहा कि जल संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर चर्चा की जरूरत है। संगोष्ठी को बालाजी कॉलेज आफ एजुकेशन, बल्लभगढ़ के प्राचार्य डॉ. जगदीश चौधरी ने भी संबोधित किया और गिरते जल स्तर पर चिंता व्यक्त की।

NEWS CLIPPING: 14.03.2018

PUNJAB KESARI

'खुद को नदियों से जोड़ना होगा'

नदियों के संरक्षण और जीर्णोद्धार पर जल-पुरुष राजेन्द्र सिंह का जोर

■ जलवायु परिवर्तन के मूल कारण का समाधान करना होगा

फरीदाबाद, 13 मार्च (ब्यूरो): प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी तथा 'वाटरमैन आफ इंडिया' के नाम से पहचाने जाने वाले डा. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि अगर हम नदियों के संरक्षण, विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते है तो हमें खुद को नदियों से जोड़ना होगा। मैगसायसाय पुरस्कार विजेता डा. राजेन्द्र सिंह वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विवेकानंद मंच द्वारा 'जल और शांति' विषय पर आयोजित एक सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। इस अवसर पर अधिष्ठाता संस्थान प्रो. संदीप ग्रोवर तथा कुलसचिव डा. संजय कुमार शर्मा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन डा. प्रदीप कुमार तथा डा. सोनिया बंसल ने किया।

अपने जीवन में छह नदियों का जीर्णोद्धार कर चुके डा. राजेन्द्र ने कहा कि नदियों के जीर्णोद्धार के लिए एक सही ज्ञान प्रणाली का होना जरूरी है। यह बताते हुए कि कैसे एक ग्रामीण द्वारा उन्हें जल संरक्षण की स्वदेशी तकनीक का ज्ञान हासिल हुआ, उन्होंने कहा कि नदियों के जीर्णोद्धार से पहले हमें जलवायु परिवर्तन के मूल कारण का समाधान करना होगा। उन्होंने कहा कि भूजल विज्ञान को लेकर बहुत से विशेषज्ञों से बेहतर ज्ञान ग्रामीणों को होता है। उन्होंने कहा कि भारत समुदाय संचालित विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणाली में महारत हासिल कर लेगा यदि स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को बेहतर ढंग से प्रयोग किया जाता।

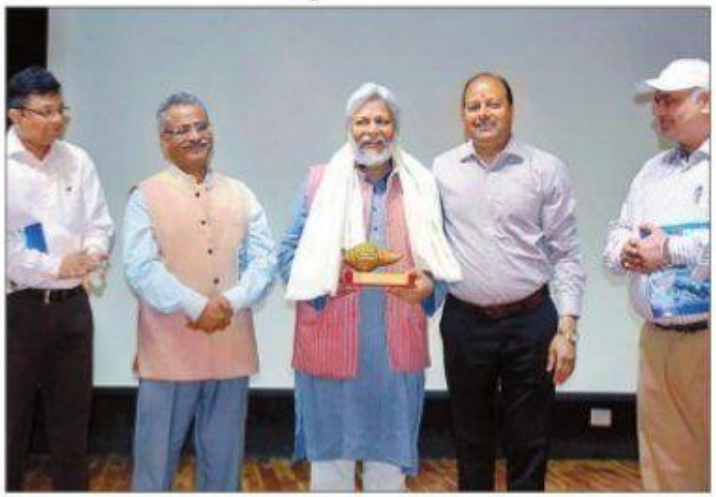

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह का स्वागत करते पदाधिकारी।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को जल संसाधन के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा। नदियों को जोड़ने की परियोजना का उल्लेख करते हुए डा. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि नदियों को जोड़ने की बजाये हमें अपने मस्तिष्क तथा हृदय को नदियों से जोड़ने की आवश्यकता है। अगर हमें देश को सूखे और बाढ़ से मुक्त करना है तो हम सभी को खुद को जल के साथ जोड़कर चिंतन करना होगा। उन्होंने कहा कि भारत नीर, नारी और नदी को सम्मान देकर ही विश्व शक्ति बना और अब हमें इनके सम्मान के प्रति संवेदनशील नहीं रहे। हमें एक बार पुन: विश्व गुरू बनने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सम्मान देना होगा। उन्होंने विश्व के पर्यावरण संगठनों के मुख्य एजेंडे में जल को लाने के लिए अपने संघर्ष के बारे में भी बताया। सेमिनार को बालाजी कालेज आफ एजुकेशन, बल्लभगढ़ के प्राचार्य डा. जगदीश चौधरी ने भी संबोधित किया और गिरते जल स्तर पर चिंता व्यक्त की। इस अवसर पर 'जल और शांति' शीर्षक पर एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्लोगन लेखन तथा भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें हितेश्वर मेहला तथा वंदना ने स्लोगन लेखन में पहला और दूसरा पुरस्कार हासिल किया तथा भाषण प्रतियोगिता में तनिशा तथा अभिनव प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Wed, 14 March 2018
epaper.punjabkesari.in//c/27016064

NEWS CLIPPING: 14.03.2018

DAINIK BHASKAR

नीर, नारी और नदी को सम्मान देकर ही भारत विश्व शक्ति बना: डॉ. राजेंद्र सिंह

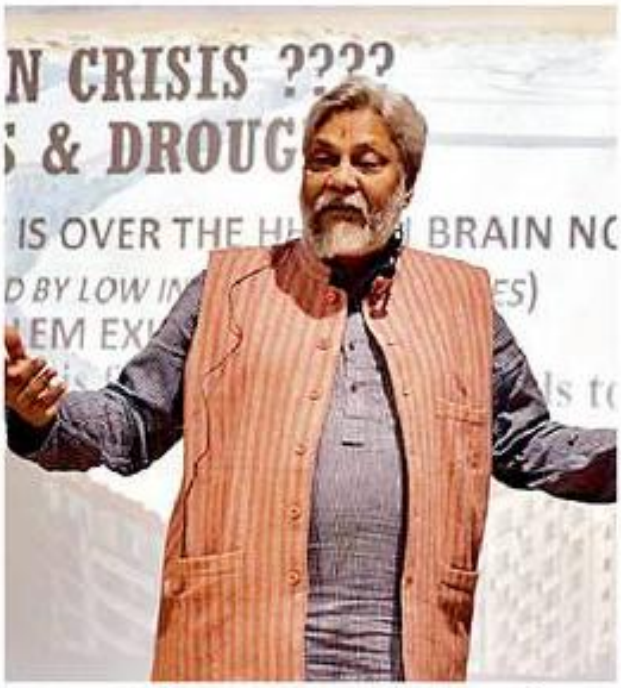

फरीदाबाद|प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी व 'वाटरमैन ऑफ इंडिया' के नाम से पहचाने जाने वाले डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि अगर हम नदियों के संरक्षण, विस्तार व जीर्णोद्धार करना चाहते हैं तो हमें खुद को नदियों से जोड़ना होगा। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को जल संसाधन के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा। भारत नीर, नारी और नदी को सम्मान देकर ही विश्व शक्ति बना। अब हम इनके सम्मान के प्रति संवेदनशील नहीं रहे। हमें एक बार पुनः विश्व गुरु बनने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सम्मान देना होगा। विश्व के पर्यावरण संगठनों के मुख्य एजेंडे में जल को लाने के लिए अपने संघर्ष के बारे में भी बताया।

NEWS CLIPPING: 14.03.2018

PUNJAB KESARI, DELHI

नदियों के संरक्षण के लिए खुद को नदियों से जोड़ना होगा: राजेन्द्र सिंह

फरीदाबाद, राकेश देव ब्यूरो चीफ (पंजाब केसरी): प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी तथा वाटरमैन आफ इंडिया के नाम से पहचाने जाने वाले डॉ राजेन्द्र सिंह ने कहा कि अगर हम नदियों के संरक्षण, विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते है तो हमें खुद को नदियों से जोड़ना होगा। मैगसेसे पुरस्कार विजेता डॉ राजेन्द्र सिंह आज यहां वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फरीदाबाद के विवेकानंद मंच द्वारा जल और शांति विषय पर आयोजित एक सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने की। इस अवसर पर अधिष्ठाता संस्थान प्रो संदीप ग्रोवर तथा कुलसचिव डा संजय कुमार शर्मा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ प्रदीप कुमार तथा डा सोनिया बंसल ने किया। अपने जीवन में छह नदियों के जीर्णोद्धार कर चुके डा राजेन्द्र ने कहा कि नदियों के जीर्णोद्धार के लिए एक सही ज्ञान प्रणाली का होना जरूरी है। यह बताते हुए कि कैसे एक ग्रामीण द्वारा उन्हें जल संरक्षण की स्वदेशी तकनीक का ज्ञान हासिल हुआए उन्होंने कहा कि नदियों के जीर्णोद्धार से पहले हमें जलवायु परिवर्तन के मूल कारण का समाधान करना होगा।

वाटरमैन ने छात्रों से किया आह्वान

उन्होंने कहा कि भूजल विज्ञान को लेकर बहुत से विशेषज्ञों से बेहतर ज्ञान ग्रामीणों को होता है। उन्होंने कहा कि भारत समुदाय संचालित विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणाली में माहरथ हासिल कर लेगा यदि स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को बेहतर ढंग से प्रयोग किया जाता। उन्होंने सभी से नदियों के जीर्णोद्धार में भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को जल संसाधन के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा।

डा. राजेन्द्र सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए कुलपति प्रो. दिनेश कुमार। (छाया: राकेश देव)

नदियों को जोड़ने की परियोजना का उल्लेख करते हुए डॉ राजेन्द्र सिंह ने कहा कि नदियों को जोड़ने की बजाये हमें अपने मस्तिष्क तथा हृदय को नदियों से जोड़ने की आवश्यकता है। अगर हमें देश को सूखे और बाढ़ से मुक्त करना है तो हम सभी को खुद को जल के साथ जोड़कर चिंतन करना होगा। उन्होंने कहा कि भारत नीरए नारी और नदी को सम्मान देकर ही विश्व शक्ति बना और अब हमें इनके सम्मान के प्रति संवेदनशील नहीं रहे। हमें एक बार पुनः विश्व गुरू बनने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सम्मान देना होगा। उन्होंने विश्व के पर्यावरण संगठनों के मुख्य एजेंडे में जल को लाने के लिए अपने संघर्ष के बारे में भी बताया। कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने डॉ राजेन्द्र सिंह का विद्यार्थियों को प्रेरणादायी संबोधन देने के लिए आभार जताया तथा कहा कि जल संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय हैए जिस पर चर्चा की जरूरत है। उन्होंने डॉ राजेन्द्र सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया। सेमिनार को बालाजी कालेज आफएजुकेशन, बल्लभगढ़ के प्राचार्य डॉ जगदीश चौधरी ने भी संबोधित किया और गिरते जल स्तर पर चिंता व्यक्त की। इस अवसर पर जल और शांति शीर्षक पर एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्लोगन लेखन तथा भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गयाए जिसमें हितेश्वर मेहला तथा वंदना ने स्लोगन लेखन में क्रमशः पहला और दूसरा पुरस्कार हासिल किया तथा भाषण प्रतियोगिता में तनिशा तथा अभिनव क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे। विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

DAINIK TRIBUNE

खुद को नदियों से जोड़ना होगा : डा. राजेन्द्र

फरीदाबाद (हप्र): वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में मंगलवार को विवेकानंद मंच की ओर से जल और शांति विषय पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इसमें मुख्यवक्ता के रूप में विश्व प्रसिद्ध जल संरक्षक (वाटर मैन ऑफ इंडिया) डा. राजेंद्र सिंह मौजूद थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि अगर नदियों का संरक्षणए विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते हैं, तो खुद को नदियों से जोड़ना होगा। उन्होंने बताया कि वह अपने जीवन में छह नदियों का जीर्णोद्धार कर चुके हैं। इसके लिए एक सही ज्ञान प्रणाली का होना जरूरी है। नदियों को जोड़ने की परियोजना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि नदियों को जोड़ने के बजाय हमें अपने मस्तिष्क और हृदय को नदियों से जोड़ने की जरूरत है।

दैनिक ट्रिब्यून Wed, 14 March 2018
epaper.punjabitribuneonline.

NEWS CLIPPING: 14.03.2018

HINDUSTAN

'खुद को नदियों से जोड़ना होगा'

फरीदाबाद। वरिष्ठ संवाददाता

कार्यशाला

- मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध जल संरक्षक डॉ.राजेंद्र सिंह थे
- इस मौके पर सभी को पानी बचाने के लिए जागरूक किया

वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में मंगलवार को विवेकानंद मंच की ओर से ह्यजल और शांति विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इसमें मुख्य वक्ता के रूप में विश्व प्रसिद्ध जल संरक्षक (वाटर मैन ऑफ इंडिया) डॉ. राजेंद्र सिंह मौजूद थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि अगर नदियों का संरक्षण, विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते हैं, तो खुद को नदियों से जोड़ना होगा।

उन्होंने बताया कि वह अपने जीवन में छह नदियों का जीर्णोद्धार कर चुके हैं। इसके लिए एक सही ज्ञान प्रणाली का होना जरूरी है। एक ग्रामीण के माध्यम से उन्हें जल संरक्षण की स्वदेशी तकनीक का ज्ञान हुआ। उनका मानना है कि भू-जल विज्ञान के संबंध में विशेषज्ञों से बेहतर ज्ञान ग्रामीणों को होता है। भारत समुदाय संचालित विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणाली में माहरथ हासिल कर सकता है, यदि वह स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को बेहतर ढंग से प्रयोग करें।

AMAR UJALA

'नदियों के संरक्षण-जीर्णोद्धार के लिए खुद को जोड़ना होगा'

फरीदाबाद। 'हम अगर वास्तव में नदियों के संरक्षण, उसके विस्तार और जीर्णोद्धार पर काम करना चाहते हैं तो हमें खुद को पहले नदियों से जोड़ना होगा। उसे समझना होगा। जानकारी करनी होगी कि आखिर किस प्रकार हम जल संरक्षण के लिए नदियों के विस्तार और संरक्षण पर काम कर सकते हैं।' मंगलवार को मैगसेसे पुरस्कार विजेता एवं वाटरमैन की उपाधि से सम्मानित डा. राजेंद्र सिंह ने ये बातें कहीं। वह वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित सेमिनार में बोल रहे थे।

'जल और शांति' विषय पर आयोजित इस सेमिनार में अपने संबोधन में डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि भूजल विज्ञान को लेकर बहुत से विशेषज्ञों से बेहतर ज्ञान ग्रामीणों को होता है। स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को बेहतर ढंग से प्रयोग किया जाए तो भारत समुदाय संचालित विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणाली में महारथ हासिल कर लेगा। छह नदियों के जीर्णोद्धार कर चुके 'वाटरमैन' ने कहा कि नदियों को जोड़ने की बजाए हमें अपने मस्तिष्क और हृदय को नदियों से जोड़ना होगा।

YMCA University of Science & Technology

(NAAC Accredited Grade 'A' State University)
Sector 6, Faridabad (HARYANA) – 121006

NEWS CLIPPING: 14.03.2018

NAVBHARAT TIMES

सेमिनार का आयोजन

■ **एनबीटी न्यूज, फरीदाबाद :** वाईएमसीए यूनिवर्सिटी द्वारा मंगलवार को जल और शांति विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान जल संरक्षण के क्षेत्र के काम कर रहे डॉ.राजेंद्र सिंह मुख्य अतिथि के रूप से मौजूद रहें। डॉ.राजेंद्र सिंह को वॉटर मैन ऑफ इंडिया भी कहा जाता है। मौके पर उन्होंने कहा कि अगर हम नदियों के संरक्षण, विस्तार और जीर्णोद्धार करना चाहते है तो हमें खुद को नदियों से जोड़ना होगा। मौके पर यूनिवर्सिटी के कुलपति दिनेश कुमार, संदीप ग्रोवर, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. सोनिया बंसल, डॉ. जगदीश चौधरी आदि मौजूद थे।

HINDUSTAN

वाईएमसीए में छात्राओं के लिए लगी सेनेटरी नैपकिन पैड मशीन, पांच सौ से अधिक छात्राओं को इसका लाभ मिलेगा

छात्राओं को पांच रुपये में मशीन से सेनेटरी पैड मिलेगा

सुविधा

फरीदाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

वाईएमसीए विश्वविद्यालय के लड़कियों के छात्रावास में विश्वविद्यालय प्रशासन की तरफ से सेनेटरी नैपकिन पैड मशीन लगा दी गई है। पायलेट प्रोजेक्ट के तहत मशीन प्रथम चरण में कॉलेज की लड़कियों के चार छात्रावास में लगाई गई है। इसकी सफलता के बाद इसे संबंधित अन्य कॉलेज और विश्वविद्यालयों में लगाया जाएगा। वहीं, स्वच्छता के प्रति गंभीरता को देखते हुए जल्द ही जलाने के लिए मशीन लगाने का निर्णय लिया है। जिसमें इस्तेमाल पैड डालकर मशीन से उन्हें नष्ट किया जा सकेगा।

पांच रुपये में मिलता है एक पैड : सेनेटरी नैपकिन मशीन में पांच रुपये का सिक्का डालने पर स्वतः एक पैड निकलता है। इस मशीन से पैड सिर्फ यहां पढ़ने वाली छात्राएं ही खरीद सकती हैं। प्रबंधन का दावा है कि यहां पढ़ने वाली छात्राओं को मशीन के माध्यम से पैड उपलब्ध कराने के लिए यह नई योजना शुरू की है। मशीन लगने से यहां की पांच सौ से अधिक छात्राओं को लाभ मिलेगा।

सिक्के का करना पड़ता है इंतजाम : सेनेटरी नैपकिन पैड मशीन मात्र पांच रुपये के सिक्के को पहचानता है। ऐसे में छात्राओं को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। छात्रावास में रहने वाली छात्राओं को अपने स्तर पर सिक्के का इंतजाम करना पड़ता है। अगर पांच का सिक्का नहीं है, तो उन्हें दिक्कत होती है।

फरीदाबाद वाईएमसीए यूनिवर्सिटी गर्ल्स हॉस्टल में लगी सेनेटरी वेडिंग मशीन। • हिन्दुस्तान

व्यापारियों से करेंगे संपर्क

विश्वविद्यालय की एक वरिष्ठ प्रोफेसर का कहना है कि इसे पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू किया है। प्रथम चरण में पैड को ओपन बाजार से खरीदा जा रहा है। इसकी सफलता के बाद थोक विक्रेताओं से संपर्क करेंगे। जिससे बाजार से सस्ते दर पर मिल सके।

करीब एक सप्ताह पहले मशीन को लगाया गया है। इसका उद्देश्य लड़कियों को कीटाणु रहित पैड मुहैया कराना है। जिससे की उन्हें संक्रमण से होने वाली बीमारियों से बचाया जा सके।

-डॉ. सोनिया बंसल, प्रोफेसर,वाईएमसीए